Global Journal of Emerging Trend in Education and Social Science
Vol. 2, Issue 1 - 2019

21वीं सदी एवं आत्मनिर्भर स्त्री (विशेष संदर्भः अन्या से अनन्या, गुडिया भीतर गुडिया, हादसे)

रेणुका*

21वीं सदी महिला सम्मान और सशक्तिकरण की सदी है क्योंकि, वर्तमान शासन काल में महिलाएँ अपने आप को सुरक्षित और सम्मानित महसूस कर रही है। महिलाओं के हित में सरकार ने कई योजनाएँ चलाई है जिससे की वह अपने पर होने वाले अन्याय, अत्याचार के खिलाफ लड़ सके एवं अपने हित में न्याय प्राप्त करने की अधिकारिणी बने, आत्मनिर्भर बने।

आज महिलाएँ पुरूषों के बराबर खड़ी होकर देश एवं प्रदेश के विकास में अपनी भूमिका निभा रही है। आज महिलाएँ हर क्षेत्र में राजनीति, शिक्षा आदि में अग्रणी भूमिका निभा रही है।

''आखिर क्यों हमेशा एक लडकी या एक औरत को ही अपना सब कुछ त्याग देना पड़ता है। फिर वह शिक्षित हो या अशिक्षित हो कोई फर्क नहीं पड़ता है। शादी के बाद अपना घर माता–पिता भाई–बहन यहां तक कि अपनी पढ़ाई, अपना भविष्य भी वह अपने सुसराल वालो के लिए छोड़ देती है।''

आज की सदी में यह कथन गलत साबित हो रहा है। हाँ एक समय था जब यही बात थी की हर क्षेत्र में महिलाएं ही त्याग एवं बलिदान किया करती थी किन्तु आज परिस्थिति अलग है, प्रत्येक जन के विचारों में परिवर्तन आ गया है। आज महिलाएँ दिनों दिन विकास की राह में आगे बढ़ रही हैं। अगर ऐसी बात होती तो आज हर क्षेत्र. में महिलाएँ हमें नजर नहीं आती और शिक्षित महिलाओं को कुछ भी त्यागने की या बलिदान करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। वह जितना समय और सम्मान अपने सुसराल को देती है उतना ही माता–पिता, भाई–बहन के लिए भी निकालती हुई अपनी राहे तय कर रही है अर्थात् आगे बढ़ रही है। ससुराल एवं मायके वाले सभी यही चाहते हैं कि उनकी बहु–बेटी आगे बढे, तरक्की करे। हाँ सहनशीलता, त्याग एवं बलिदान महिला के गुण हैं जो ईश्वर ने उसे प्रदत्त किये हैं। जिनके सहारे वह परिवार में समाज में संतुलन बनाएं रखती हैं, उन्हें एक सूत्र में बांधे रखती है बिखरने नहीं देती है। हाँ कुछ क्षेत्र है जहाँ संकीर्ण सोच के प्राणी आज भी हैं जो महिलाओं को मात्र चार दीवारी में कैद रखना चाहते हैं। वहाँ भी मूल कारण अशिक्षा ही रहा है। अगर समस्त जन शिक्षित होगा तो हमारे राष्ट्र में ऐसी स्थिति कहीं नजर नही आएगी और ऐसा ही हो रहा है इसलिए पहली आवश्यकता यह है कि समस्त जन शिक्षित हो अपने मान–सम्मान के साथ रहना सिखें। स्वयं पढ़े औरों को पढ़ाये, तभी एक आत्मनिर्भर महिला, पुरूष, परिवार, समाज व राष्ट्र का निर्माण होगा। हमारा राष्ट्र इस दिशा में आगे बढ़ रहा इसमें कोई संदेह नहीं।

आधुनिक महिला आत्मकथाकार प्रभा खेतान, पुष्पा मैत्रेयी, रमणिका गुप्ता आदि ने अपनी आत्मकथाएं क्रमशः अन्य से अनन्या, गुडिया भीतर गुडिया एवं हादसे के माध्यम से समाज में यही संदेश देने की कोशिश की है कि महिलाएँ हर क्षेत्र में स्वतंत्र हैं। वह भी पुरूषों की भांति स्वतंत्रतापूर्वक जीवन जीने की अधिकारिणी है, आज महिला आत्मनिर्भर है, वह अपनी राहे स्वय

*शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

तय कर सकती है और अपनी राहों में आने वाली बाधाओं का विरोध करना उसका अधिकार है, वह निःसंकोच विरोध कर सकती है।

प्रभा खेतान स्वयं आत्मनिर्भर, संघर्षशील महिला रही है। पिता की मृत्यु के पश्चात् आर्थिक संकट के चलते पढ़ाई पुरी नहीं हो पाई। लेखिका ने सीढी दर सीढी जीवन का मार्ग प्रशस्त किया और कलकते के पुरूष वर्चस्व वाले व्यावसायिक समाप्त में सकल उद्योगपति होने का सम्मान हासिल किया, कलकता चैम्बर ऑफ कॉमर्स की अध्यक्ष बनी। प्रभा खेतान ने अपनी आत्मकथा के माध्यम से यह भी संदेश देने का प्रयत्न किया है कि आज की महिला किसी पर भी आश्रित नहीं है। स्वयं ने डॉक्टर से पागलपन की हद तक प्रेम किया किंतु उस पर आश्रित नहीं रही।

''पुरूष जैसे औरत को काम में लेता है, औरत भी वैसे ही पुरूष के साथ व्यवहार कर सकती है। औरत भी तो कह सकती है तू नहीं तो कोई और सही।''

उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से प्रभा खेतान यह स्पष्ट करना चाहती है कि अगर समाज में पुरूष इतना आत्मनिर्भर है कि वह अपने समस्त क्षेत्र में स्वतंत्र है तो नारी को भी यह अधिकार है कि वह भी किसी से बंधे न रहकर स्वतंत्रापूर्वक अपनी राहें तय कर सकती है, अपने निर्णय स्वयं ले सकती है।

प्रभा खेतान की भाति ही पुष्पा मैत्रयी भी अपनी आत्मकथा ''गुडिया भीतर गुडिया'' के अतर्गत स्वतंत्र विचारों के साथ जीने हेतु छटपटाती नजर आती है एवं अन्ततः वह भी अपनी दिशा तय कर लेती है। उनकी आत्मकथा में बदलते समय के साथ बदलती हुई नारी के आख्यान है। नारी जो घर से बाहर निकलकर अपने सपने देखती हैं, अपनी नियति खुद बनाने के लिये उपक्रम रचती है, स्वावलंबी बनने हेतु जद्दोजहद करती है।

''अभी भी नहीं बदला है पिता का दबाव, पति का दबाव, भाइयों के दबाव, रिश्तेदारों के दबाव–वे तो बराबर बने हैं वहां पर अभी भी।''

मैत्रेयी कहना चाह रही है कि गांव में जो पुराने समय में हालात थे वे ही अभी भी बने हुए हैं कही परिवर्तन नजर नहीं आ रहा। स्वयं महिला लेखिका होने के नाते स्त्री की व्यथा को उन्होंने गहराई से जाना, समझा और व्यक्त किया है। अतः इसी कारण उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से गांव की स्त्रियों के प्रगतिशील जीवन को चित्रित करने का प्रयास किया है। मैत्रेयी जिस ग्रामीण परिवेश में पली–बढ़ी, जहां सडक नही, कोई सुविधा नहीं, कोई स्कूल नहीं। इसी कारण हमें उनकी आत्मकथा में उतनी बेबाकी नजर नहीं आती जितनी की प्रभा खेतान के 'अन्य से अनन्या' में नजर आती है। इसका कारण परिस्थितियां ही हो सकती हैं। जो दोनों लेखिकाओं की आत्मकथा में दिखाई देती है। प्रभा खेतान मारवाडी धनाढ्य परिवार में पली–बढ़ी। उनका ज्यादा बेबाकपन डॉक्टर से सम्बन्ध को लेकर है तो जब तक वह काफी मैच्योर हो चुकी थी, वहीं मैत्रेयी कच्ची अवस्था में स्कूल जाने वाली लड़की थी। उस समय जितनी समझदारी प्रभा खेतान में थी उतनी मैत्रेयी में नहीं। मैत्रेयी जी में नादानी थी।

ऐसे ही पितृसत्तात्मक हादसों से, मुठभेड़ करती लेखिका रमणिका गुप्ता की आत्मकथा 'हादसे' है। जिसके अन्तर्गत लेखिका लिखती है कि ''स्त्री को सदा से पुरूष की अनुगामिनी बनकर जीवन जीने की शिक्षा दी जाती है।'' लेखिका का यह कहना है कि यही हमारे समाज की

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

विडम्बना है कि समाज स्त्री को मात्र अनुगामिनी रूप में ही स्वीकार करता है। स्त्री का बाहर जाना, स्वावलंबी बनना समाज के तथाकथित पहरेदारों को मंजूर नहीं है। रमणिका यह कहना चाह रही है कि एक कामयाब औरत से समाज को दुश्मनी इसलिए नहीं की उससे उन्हें कोई नुकसान पहुँचेगा, बल्कि दुश्मनी इसलिए है कि एक औरत ने इतने लोगों का विश्वास कैसे प्राप्त कर लिया, बिना उनकी मदद के यह कैसे संभव हुआ। रमणिका कहती है पुरूष औरत को उसी हालात में बर्दाश्त करता है, जब उसे यह यकीन हो कि वह पुरी तरह उसी पर आश्रित है एवं स्वयं निर्णय नहीं ले सकती। पुरूष के मुकाबले कोई पुरूष हो तो उन्हे अपनी क्षमता उन्नीस या बीस ही नजर आती है किन्तु अगर कोई औरत है तो उसे वही अन्तर अत्यधिक नजर आने लगता है और वह हीन–भवना से दब जाता है।

रमणिका स्वयं राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन की धारणा से जुडी रही है। वे अपने निर्णय स्वयं लेती थी एवं अच्छा–बुरा भोगने को सदैव तैयार रहती थी।

रमणिका का कहना है कि औरतों को आत्मनिर्भर बनना चाहिए। खुद का सहारा बनना चाहिए, सहारा खोजना नहीं चाहिए। महिलाओं के छुई–मुई बनने से समाज मे काम चलने वाला नहीं है। आग पर चलने की हिम्मत जुटाना आवश्यक है। हवा के विपरित चलने का इरादा अपेक्षित है।

रमणिका ने अपने मापदड खुद गढ़े है ''समरथ को नहि दोष गुसाईः'' वे स्वय समर्थ बनकर अपनी शर्तों पर चलीं। उन्हें समाज के पीछे चलने की बजाए समाज को पीछे चलाना और प्रतिक्रिया में रूढ़िवादियों का झल्लाना अच्छा लगता है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि आज 21वीं सदीं की नारी सही, अर्थों में आत्मनिर्भर बनने की ओर सीढी दर सीढ़ी कदम बढ़ा रही है। हर क्षेत्र में वह पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाए हुए खड़ी है, वह अपनी राहें स्वयं तय करती है।

आत्मकथा 'हादसे' में स्पष्ट होता है कि रमणिका ने अपना जीवन अपनी शर्तो पर जिया, अपने मानदण्ड स्वयं निर्धारित किये। बंधी–बंधाई रूढ़ियों पर वे न विश्वास करती है और न ही पारम्परिक लीक पर चलना उचित मानती है। वे स्वयंसिद्धा है और अन्य औरतों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत है। यही स्वयंसिद्धा वाली प्रवृति हमें प्रभा खेतान के 'अन्य से अनन्या' एवं मैत्रेयी पुष्पा के 'गुडिया भीतर गुडिया' में देखने को मिलती है। इन तीनों आत्मकथा लेखिकाओं ने समाज की बेनुनियादी रूढ़ियां को तोड़ते हुए स्वयं को सिद्ध करने की प्रेरणा दी है।

सन्दर्भ सूची

1. गुडिया भीतर गुडिया,–पुष्पा मैत्रेयी।
2. हादसे,–रमणिका गुप्ता।
3. अन्य से अनन्या,–प्रभा खेतान।
4. आपहुदरी,–रमणिका गुप्ता।
5. कमल व कुदाल के बहाने,–रमणिका गुप्ता।
6. कस्तुरी कुण्डल बसै,–पुष्पा मैत्रेयी।
7. भारतीय नारी,–स्वामी विवेकानंद।
8. नारी कभी न हारी,–पवित्र कुमार शर्मा।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.